समकालीन हिन्दी कहानियों में व्यक्त मध्यवर्गीय नारियों की आर्थिक समस्या

विनीता वी
शोधार्थी
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, एरणाकुलम्

प्रेमचन्दोत्तर काल की रचनाओं में उच्च एवं निम्न वर्ग की अपेक्षा, मध्यवर्ग की नारियाँ ही सामाजिक जीवन के यथार्थ का प्रतीक है । इन्हीं मध्यवर्गीय नारी-जीवन के अन्तद्वन्द्व तथा बाह्य समस्याओं का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण समकालीन कहानियों में भी हुआ है । उनकी आर्थिक स्थिति भी उनके समस्याओं का प्रमुख कारण बनता है । मंजुलता सिंह के शब्दों में-''मध्यवर्ग की समस्यओं एवं सबलताओं के साथ ही उसकी निजी दुर्बलताएँ भी है । जिनके कारण भी यह वर्ग अन्य वर्गों से अपेक्षाकृत आक्रान्त है । मध्यवर्ग की सबसे बड़ी दुर्बलता है कि कुल-मर्यादा को निभाने केलिए अनेक प्रदर्शन करता है और वे प्रदर्शन उसकी आर्थिक स्थिति से मेल न खाकर मानसिक संघर्ष का कारण बन जाता हैं ।''[1] इस तरह उसकी प्रदर्शनप्रियंता, स्वार्थीपन, आत्मकेन्द्रिता, इत्यादि अवगुणों ने उसे हर प्रकार से निर्बल बनाया है ।

समकालीन हिन्दी कहानियों में मध्यवर्गीय नारी की विवशताओं, कुंठाओं की सफल अभिव्यक्ति है । आधुनिक मनोविश्लेषण के आधार पर मध्यवर्ग की नारी को ही कहानियों में उतारा है । समकालिन कहानीकारों के चारित्र-चित्रण के परिणामस्वरूप आज की नारी एक यथार्थ नारी के रूप में प्रकट हुई है । वह 'शरत्-युग की नारी की भाँति भावुकता के फेर में पड़कर अहंवादी पुरूष की इच्छा के बहाव में अपने को पूर्णतया बहाना और मिटाना पसंद, नहीं करती, बल्कि स्थिति की वास्तविकता को समझकर व्यक्ति और समाज के अत्याचारों का सामना पूर्ण शक्ति से करने के योग्य अपने को बनाने की चेष्टा में जुट रही है ।'[2] आर्थिक रूप से पति पर आश्रित होते हुए भी कभी-कभी मध्यवर्गीय नारियाँ उनके खिलाफ़ बोलने का साहस जुड़ा लेती है ।

मालती जोशी के 'परख' कहानी संग्रह की 'अपदस्थ' कहानी की नायिका 'छाया' है, जिसने जीवनभर अपने पति और उनके घरवालों की सेवा की; लेकिन जब उसके बेटे की शादी की बात आई, तो वह अरमान बनकर ही रह गया । बेटे ने अपनी मर्जी से शादी की जिससे क्रुध होकर छाया के पति ने बेटे से सारा रिश्ता तोड़ दिया । लेकिन माँ और बेटे का रिश्ता तोड़ने से भी नहीं टूटता है । इसलिए वह अपने पति के खिलाफ बोल उठती है - ''मैंने आपके इस घर को मंदिर - सा पावन और सुन्दर बनाने में जीवन के पूरे अठ्ठाईस साल लगा दिए हैं । मैंने अपने भाई की, बहन की धूमधाम से शादियों की । पर अपने इकलौते बेटे की शादी का अरमान मन ही में रह गया । आपका अपना अहं इतना बड़ा हो गया कि बेटे की ममता उसके सामने बौनी पड़ गई, लेकिन मेरा बेटा आपकी तरह कठोर नहीं है । उसने मेरी पीड़ा को समझा है । इसलिए आपकी नाराजगी का खतरा उठाकर भी वह यहाँ आ रहा है । और मेरे इस बहादुर बेटे को इस घर में आने से कोई रोक नहीं सकता, क्योंकि यह घर जितना आपका है, मेरा भी है ।''[3]

तो कहीं कुछ महिला पात्र समकालीन कहानियों में ऐसे भी मिल जाते हैं जो आर्थिक रूप से अपने पति पर तो निर्भर रहते है लेकिन उनको जो भी थोड़ा-कुछ पैसा घर-खर्च के लिए मिलता है, उससे भी कटौती कर वे पैसा भविष्य के लिए जोड़ते है । ऐसी ही एक नारी पात्र हमें मीना अग्रवाल जी की कहानी 'इस पार' में देखने को मिलता है । जब अपने पति के बहन की शादी तय हो जाती है, तब वह अपने पति को किसी से उदार या ऋण लेने से मना करती है और कहती

है कि, ''हमारे पास जो भी थोड़ा-बहुत जमा है, मुन्नी की शादी में वहीं दे देंगे । और हाँ, मैं घर खर्च में कटौती करके फिर जोड़ लूँगी, तुम चिन्ता मत करो ।''[4] आर्थिक स्थिति से कमज़ोर होते हुए भी वह अपने पति का साथ देती है ।

यद्यपि मध्यवर्ग का बौद्धिक स्तर उच्चवर्ग के समान ही होता है, आर्थिक स्तर पर इनमें असमानता होती है । मध्यवर्ग विशेष रूप से क्रांतिकारी होता है, क्योंकि 'राष्ट्रीयता उसका धर्म रहा है तथा सामाजिक सुधार आन्दोलन उसका मन्त्र ।'[5] आर्थिक समस्या के कारण इनके जीवन का समुचित विकास नहीं हो पाता है, इच्छाएँ अतृप्त रहती है । इस हेतु इनमें घुटन, कुंठा, संत्रास, आदि का आधिक्य होता है ।

'गीत पुराने याद न आना' कहानी मालती जोशी जी की कहानी संग्रह 'परख' से हैं, जिसकी नायिका 'छाया' एक मध्यवर्गीय परिवार की बेटी है । उसे संगीत का शौक था, लेकिन बेटी की बढ़ती उम्र को देख उसके पिता उसकी शादी करवा देते है । इस बात को लेकर वह हमेशा उन्हें कोसती है और कहती है कि ''एक तो शादी करवाकर मेरे कॅरियर का कचरा कर दिया ।''[6] पर सच्चाई तो यहीं थी कि हर माँ -बाप की तरह अच्छा रिश्ता आते ही उसके माँ-बाप ने भी अच्छी जगह शादी करवा दी थी । पर छाया इस बात को स्वीकार नहीं कर पाई ।

मध्यवर्गीय नारी ही पाश्चात्य प्रभाव की ओर अधिक आकर्षित होती है । पर दूसरी ओर भारतीय संस्कृति को भी ये तिरस्कृत नहीं कर सकती । इसलिए मध्यवर्गीय नारियाँ पुरानी सामाजिक मान्यताओं एवं रूढ़ियों को पूर्णतः नकार नहीं पाती है , न ही स्पष्टतः आधुनिक मानदण्डों को स्वीकार कर पाती है । अतः अन्तदृन्द्ध, मानसिक विकार तथा बाह्याडंबर से आक्रान्त रहती है । इसका उदाहरण 'इस पार' कहानी संग्रही की 'दहकना' कहानी में मिलता है । 'निधि' आर्थिक रूप से स्वतंत्र है, इसलिए वह किसी का भी शासन बर्दाश्त नहीं कर सकती । वह अपने पति को छोड़ अलग रहती है । अपनी सहेली से वह कहती है कि, ''मैंने अकेले रहने का निश्चय किया है । अच्छी नौकरी है मेरे पास । कम्पनी का फ्लैट और कार भी । कभी मन हुआ, तो हो सकता है दुबारा शादी कर लूँ, पर सच कहती हूँ मुझे दबाया गया तो तुरन्त छोड़-छाड़ दूँगी । हाँ-फिर से ।''[7] यहाँ निधि शादी को आवश्यक घटक मानती है, पर उसे बंधन बनाने को राज़ी नहीं हैं ।

''आर्थिक मुक्ति ने स्त्री को नया सामाजिक व्यक्तित्व भी दिया जिसे प्रेम तथा परिवार की बेदी पर समार्पित कर पाना सहज नहीं रहा ।..... अपने व्यक्तित्व को वह परस्परागत पत्नीत्व के सम्मुख समर्पित करने के लिए प्रस्तुत है । किन्तु इसमें सबसे बड़ी बाधा पुरूष है ।''[8] मध्यवर्गीय समाज में विवाह, पातिव्रत्य धर्म तथा आर्थिक स्वतंत्रता के लिए बाहर निकलना तथा इनके बीच सामंजस्य स्थापित करना एक जटिल समस्या बन चुकी है । आर्थिक समस्या ने, जो मार्क्सवाद और समाजवाद से पूरी तरह प्रभावित थी, उसने मध्यवर्ग को जितना दंडित, किया उतना उच्च वर्ग एवं निम्नवर्ग को नहीं । उच्च वर्ग के समक्ष धन की कोई चिन्ता ही नहीं थी ; निम्न वर्ग भी अपने सीमित आय में संतुष्ट था । पर मध्यवर्ग अधिक की चाह में दौड़ता रहता है ।

आर्थिक स्वसंत्रता की चाह करती हुई मध्यवर्गीय नारी का उदाहरण हमें उषा महाजन की कहानी 'घर' मे मिलता है, जो औरतें तथा अन्य कहानियाँ' कहानी संग्रह में है । इसकी नायिका 'निमा' है, जो अपने पति की दासता और, बच्चे की परवरिश करते-करते थक गई थी । इसलिए उसने पति की चाह के खिलाफ़ नौकरी करने का फैसला किया । वह घर से दूर मसूरी में काम करने का अपना निर्णय पति को बताते हुए कहती है, ''मुझे नौकरी मिल गई है । मसूरी के एक डिपार्टमेंटल स्टोर में, मैनेजर की । बबलू यहीं रहेगा तुम्हारे पास । तुम जैसा भी चाहो उसका इन्तज़ाम कर सकते हो । चाहो तो अपनी चेहती अम्मा जी को बुला लेना । और, जैसे तुम ज़्यादातर दौरों पर रहते हो और बीच-बीच में एकाध दिन के लिए यहाँ आते हो, वह भी मेरे पास नहीं, अपने दफ़्तर के पास आते हो, वैसे ही मैं भी मसुरी से बीच-बीच में आती रहूँगी । ठीक है न यह अरेंजमेंट?''[9]इस तरह अपनी आर्थिक स्वतंत्रता की माँग निमा अपन पति के सामने रखती है । पर सबसे दूर जाकर वह अपने घर का महत्त्व समझती है ।

आजकल, तो प्रायः मध्यवर्ग की नारियाँ शिक्षित होती हैं । इनके भीतर आत्माभिमान होता है और ये स्वावलम्बी जीवन जीना चाहती हैं । आर्थिक आत्मानिर्भरता होने के बावजूद भी वह घर और घरवालों के अधीन रहना पसंद करती है । इसके मूल में शायद हमारी भारतीय सांस्कृतिक परम्परा ही है जो पति को देवता स्वरुप मानते हैं, पत्नी को अनुगता बनकर उसकी सेवा में ही उसकी कर्तव्य-परायणता समझती है ।

आज मध्यवर्गीय नारी की आर्थिक स्थिति में बहुत बदलाव आया है । कानूनीतौर पर भी इनको पुरूषों के बराबर अधिकार प्राप्त है । वह प्रत्येक क्षेत्र में स्वतंत्र है । इसी प्रकार समकालीन कहानीकार या लेखिकाएँ भी नारी को एक नए मूल्य, नयी दृष्टि एवं नए परिवेश में स्थापित करने में सफल हुए है । समकालीन कहानियों में हम देख सकते है कि नारी का जीवन केवल कर्तव्य में ही सीमित नहीं है । उसे घर-गृहस्थी, पति-बच्चे आदि में बांधे रखना उसके प्रति अन्याय है । इसके अतिरिक्त भी नारी का अलग क्षेत्र है, व्यक्तित्व विकास की अनेक संभ्भावनाएँ हैं । वह भी अपने नारीत्व को उभार सकती है ।

संक्षेप में कहें तो आर्थिक स्थिति के अनुसार समाज में नारी का वर्गीकरण भी किया जा सकता है, जैसे कि-

1. अशिक्षित होते हुए आर्थिक स्थिति से पूर्ण रूप से पति / परिवार पर निर्भर रहने वाली नारी।
2. शिक्षित होकर भी आर्थिक रूप से पति / परिवार पर निर्भर रहते हुए भी अपने अधिकार के लिए लड़नेवाली नारी ।
3. आर्थिक उन्नति के लिए सभी सामाजिक बंधनों को भी भुलाने के लिए तैयार नारी ।

संदर्भ :

1. मंजुलता सिंह - हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग - पृ.सं- 16
2. इलाचन्द्र जोशी - विवेचन - पृ.सं- 124
3. मालती जोशी - परख (अपदस्थ) - पृ.सं- 110
4. मीना अग्रवाल - इस पार (इस पार) - पृ.सं- 36
5. चण्डी प्रसाद जोशी-हिन्दी उपन्यासः समाजशास्त्री विवेचन - पृ.सं- 38
6. मालती जोशी-परख (गीत पुराने याद न आना) - पृ.सं- 15
7. मीना अग्रवाल - इस पार (दहकना) - पृ.सं- 47
8. डॉ. विजयमोहन सिंह - आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में प्रेम की परिकल्पना - पृ.सं- 213
9. उषा महाजन - औरतें तथा अन्य कहानियाँ (घर) - पृ.सं- 28